ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class VII

Subject- Hindi Second Language

Topic- पाठ 7 (कहानी)

By- नीलम सौंखला

©ISWK

मिठाईवाला

CLASS 7 : पाठ 5 - वसंत भाग - II
हिन्दी
मिठाईवाला (कहानी)
लेखक :: भगवतीप्रसाद वाजपेयी

मिठाईवाला

खिलौने बेचा करता था।

रोहिणी उठकर अपने पति विजय बाबू के पास गई–"ज़रा उस मुरलीवाले को बुलाओ तो, चुन्नू-मुन्नू के लिए ले लूँ। क्या पता यह फिर इधर आए, न आए। वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए हैं।"

विजय बाबू एक समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। उसी तरह उसे लिए हुए वे दरवाज़े पर आकर मुरलीवाले से बोले–"क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली?"

किसी की टोपी गली में गिर पड़ी। किसी का जूता पार्क में ही छूट गया, और किसी की सोथनी (पाजामा) ही ढीली होकर लटक आई है। इस तरह दौड़ते-हाँफ़ते

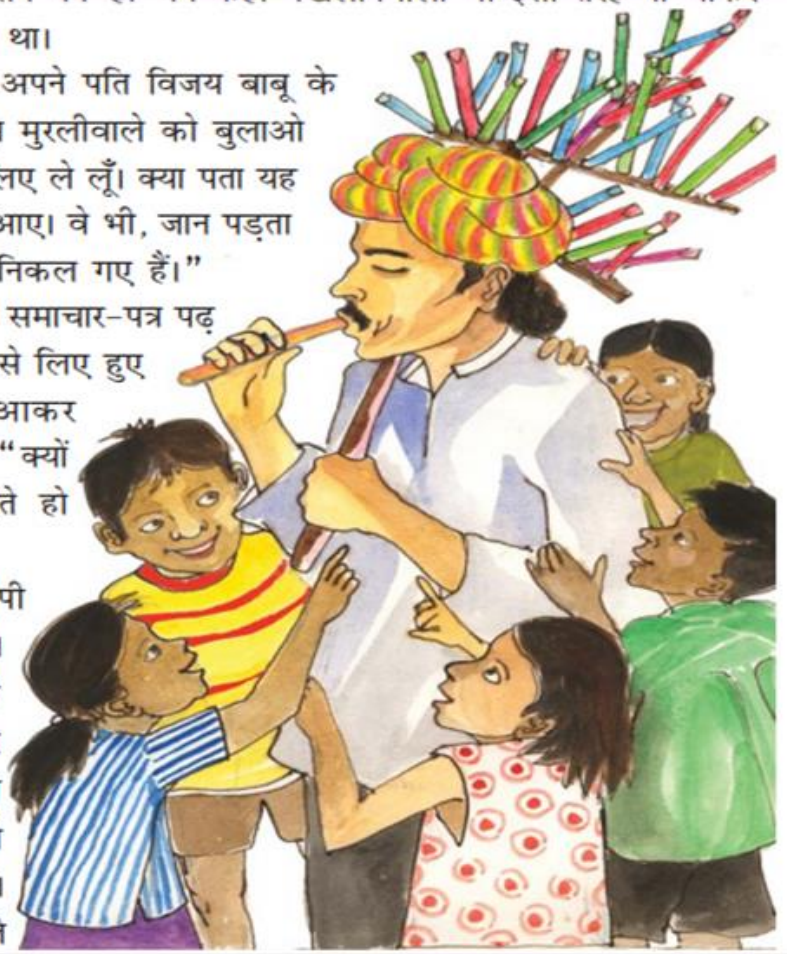

इस कहानी के लेखक भगवतीप्रसाद वाजपेयी जी है

लेखक-परिचय

भगवतीप्रसाद वाजपेयी

कानपुर के मंगलपुर ग्राम में 11 अक्टूबर, 1899 को जन्मे भगवतीप्रसाद ने नियमित पढ़ाई मिडिल तक ही की। कई नौकरियां की और लेखन जारी रहा।
इन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा मध्यवर्गीय समाज की विसंगतियों का यथार्थपरक चित्रण किया। इनकी रचनाओं में जीवन की विविध झाँकियाँ देखने को मिलती हैं।
हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति तो आप रहे ही, फिल्मों के लेखन के लिए भी भाग्य आजमाया। 'प्रेमपथ', 'मीठी चुटकी', 'अनाथ पत्नी', 'त्यागमयी', 'दो बहनें', 'मनुष्य और देवता' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। कुल 33 उपन्यास श्री वाजपेयी ने लिखे।
कहानी संग्रहों में प्रमुख हैं- 'मधुपर्क', 'हिलोर','खाली बोतल', 'उपहार', 'दीपमालिका', उतार-चढ़ाव, मेरे सपने, अंगारे और 'बाती और लौ'। इनके नाटक 'राय पिथौरा' और 'छलना' भी चर्चित रहे। एक कविता-संग्रह 'ओस की बूंद' भी है।
बालोपयोगी साहित्य भी भगवतीप्रसाद वाजपेयी जी ने खूब लिखा। 'ऊर्मि' और 'आरती' जैसी पत्रिकाओं का संपादन भी श्री वाजपेयी ने किया। 1922-23 में आप 'माधुरी' के संपादन विभाग में थे।
मई, 1973 को आपका निधन दतिया में हो गया।

मिठाईवाला

शीर्षक

मिठाईवाला कहानी का शीर्षक चरित्रप्रधान है। जब कहानी का शीर्षक कहानी के मुख्य चरित्र को आधार बनाकर तय किया जाए तब उसे चरित्रप्रधान शीर्षक कहते हैं।

उद्देश्य

१.वातावरणप्रधान मनोवैज्ञानिक कहानी है।

२.बच्चे स्वभाव से निश्छल और अबोध होते हैं और उनका निश्छल प्रेम जीवन की वेदना व कष्टों को हल्का कर देता है।

३.कहानी में वात्सल्य-भाव की प्रधानता है जिसमें एक फेरीवाला अपने मृत बच्चों के शोक को भुलाने के लिए अन्य बच्चों में अपने बच्चों की सूरत ढूँढता है।

४.अतीत के दुख में नहीं डूबना चाहिए बल्कि वर्तमान में खुशियों को तलाशने की ईमानदार कोशिश जरूर करनी चाहिए। फेरीवाला जीवन के इस रहस्य को जान लेता है और अलग-अलग रूपों में बच्चों से मिलजुल कर अपने कष्ट को कम करता है।

५.दूसरों को प्रसन्नता बाँटकर इनसान स्वयं भी सुखों का भागीदार बनता है।

६.फेरीवाले के माध्यम से एक व्यक्ति के संघर्ष करने की जिजीविषा को भी दर्शाया गया है।

फेरीवाला

१.तीस-बत्तीस वर्ष का व्यक्ति
२.विनम्र स्वभाव
३.वात्सल्य-भाव
४.मृदुल स्वर
५.जीवन-संघर्ष की जिजीविषा
६.संतोष और धैर्य की भावना

कहानी के मुख्य प्रसंग:-

- खिलौनेवाले का आकर्षक स्वर और बच्चों की उत्सुकता
- फेरीवाला एक मुरली वाले के रूप में ।
- मिठाई वाले के रूप में नगर में आना ।
- चुन्नू मुन्नू का आना और मिठाई वाले की उत्सुकता।

मिठाईवाला (कहानी) का सारांश

मिठाईवाले के माध्यम से लेखक ने एक ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्ति की मन: स्थिति पर प्रकाश डाला है जो असमय ही अपने बच्चों तथा पत्नी को खो चुका है। अपने निराशा भरे जीवन में आशा का संचार करने के लिए वह कभी मिठाईवाला, कभी मुरली वाला व कभी खिलौने वाला बनकर आता है बच्चों के प्रति उसका विशेष लगाव झलकता था। उसे उन बच्चों में अपने बच्चों की झलक नजर आती थी जिससे उसे बहुत संतोष और प्रसन्नता का अनुभव होता है। मिठाईवाले का बच्चों को आकर्षित करना-मिठाईवाला पैसों के लालच में अपना सामान नहीं बेचता था, वह तो चाहता था कि बच्चे सदा हँसते-खेलते हैं। इस कारण जब-जब भी आता, बच्चों की मनभावन चीजें, कभी खिलौने व कभी मिठाइयाँ बेचने के लिए लाता। गली भर में गा-गाकर व कम दाम में सामान बेचकर बच्चों को प्रसन्न करता। रोहिणी की हैरानी का कारण-विजय बाबू के बच्चे चुन्नू-मुन्नू एक दिन एक खिलौने वाले से खिलौने लेकर आए तो उनकी माँ रोहिणी ने उनसे पूछा-'कितने में लाए हो?' तो मुन्नू ने बताया 'दो पैसे में।' रोहिणी हैरान थी कि खिलौने वाला इतने बढ़िया खिलौने इतने कम दामों में क्यों बेच गया?

मुरलीवाला मुरली बजाकर सबका मन मोह लेता था। रोहिणी ने भी उसकी मधुर आवाज़ सुनी तो उसने जान लिया कि यह वही खिलौनेवाला है। उसने अपने पति से मुरलियाँ खरीदने को कहा। विजय बाबू ने दाम पूछा तो मुरलीवाले ने कहा कि वैसे तो तीन-तीन पैसे की बेचता हूँ लेकिन आपको दो पैसे में दूंगा। ऐसा कहने पर विजय बाबू उसे कहने लगे कि तुम लोग तो झूठ बोलते हो, सबको दो पैसे में ही देते होंगे। तो मुरलीवाला भी कह उठा कि यह तो ग्राहकों का दस्तूर है कि दुकानदार भले हानि में वस्तु बेचे पर ग्राहक को यही लगता है कि वह लूट रहा है। विजय बाबू ने मुरली के प्रति उपेक्षा भाव दिखाते हुए भी दो मुरलियाँ खरीद ही ली। यह सब बातें सुनकर भी रोहिणी को न जाने क्यों मुरलीवाले के प्रति सहानुभूति थी। मिठाईवाले का बच्चों को बहलाना-आठ माह बीतने के बाद एक दिन फिर नगर-भर में मधुर कंठ फूट पड़ा,

मिठाईवाले को रोहिणी ने तुरंत पहचान लिया कि यह वही फेरीवाला है। उसने दादी से कहा चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। उसे कमरे में बिठाओ। रोहिणी स्वयं चिक की ओट में बैठ गई और दादी ने उसे बिठा लिया। दादी ने मोल-भाव कर गोलियाँ ले ली। लेकिन रोहिणी के मन में तो उत्सुकता थी कि उसे इस व्यवसाय में क्या बचता है क्योंकि वह इतने कम दामों पर सामान बेचता था। मिठाईवाले ने कहा कि यही खाने भर को मिल जाता है और कभी नहीं भी मिलता। पर संतोष, धैर्य और असीम सुख जरूर मिल जाता है यही वह चाहता भी है।

मिठाईवाले के जीवन के बारे में जानने की जिज्ञासा रोहिणी की बढ़ती चली गई। उसने उसके घर-परिवार के बारे में जानना चाहा। मिठाईवाला भावुक हो उठा। उसने गंभीरता से बताना शुरू किया कि मेरे भी बच्चे थे, सुंदर स्त्री थी, अच्छा व्यवसाय था, नौकर-चाकर थे लेकिन विधाता की लीला कि सब समाप्त हो गया। बस उन्हीं बच्चों की खोज में निकला हूँ, इन्हीं बच्चों में ही उन्होंने कहीं जन्म लिया होगा। इन्हीं की खुशी से संतोष पा लेता हूँ। पैसों की कमी थोड़े है। जो नहीं है उसे ही पाना चाहता हूँ। मिठाईवाले की भावुकता-अपने बीते दिनों की याद करते ही मिठाईवाला भावुक हो उठा। इतने में चुन्नू-मुन्नू माँ का आँचल पकड़े माँ से मिठाई माँगने लगे। मिठाईवाले ने दो पुड़ियाँ मिठाइयों से भरी उन्हें पकड़ा दीं। रोहिणी व दादी ने पैसे देने चाहे तो उसने कहा आज ये पैसे न लूँगा। कहते हुए उसकी आँखें भर आईं। यह कहकर उसी प्रकार मीठी आवाज़ में 'बच्चों को बहलाने वाला मिठाईवाला' कहकर आगे बढ़ गया।

I. बहुविकल्पीय प्रश्न

(*i*) 'मिठाईवाला' पाठ के लेखक इनमें से कौन हैं?

(क) नागार्जुन (ख) शिवप्रसाद सिंह

(ग) शिवमंगल सिंह (घ) भगवती प्रसाद वाजपेयी।

(*ii*) खिलौनेवाला अपनी खिलौनों की पेटी कहाँ खोल देता था?

(क) गलियों में (ख) पार्क में

(ग) बच्चों के झुंड के बीच (घ) लोगों के बीच।

घ

ग

(iii) खिलौने देखकर बच्चे ..... हो उठते।

(क) पुलकित (ख) संचित

(ग) संयमित (घ) गर्वित।

(iv) खिलौनेवाले का गान गली भर के मकानों में कैसे लहराता था?

(क) झील की तरह (ख) सागर की तरह

(ग) नदी की तरह (घ) तालाब की तरह।

(v) चुन्नू-मुन्नू ने कितने में खिलौने खरीदे थे?

(क) तीन पैसे में (ख) दो पैसे में

(ग) दो आने में (घ) तीन रुपए में।

(vi) खिलौनेवाला मुरलियाँ बेचने कितने समय बाद उस नगर में आया?

(क) चार माह बाद (ख) आठ माह बाद

(ग) एक साल बाद (घ) छः माह बाद।

(vii) मुरलीवाला इनमें से कौन-सा साफा बाँधता था?

(क) जयपुरी (ख) जैसलमेरी

(ग) बीकानेरी (घ) उदय पुरी।

(viii) रोहिणी को खिलौनेवाले का स्मरण कब हो आया?

(क) चुन्नू-मुन्नू का खिलौना देखकर (ख) सस्ती मुरली देखकर

(ग) मुरली वाले को देखकर (घ) खिलौनेवाले का मादक स्वर सुनकर।

क

ख

ख

घ

ग

घ

घर में रहें , सुरक्षित रहें और स्वस्थ रहें

धन्यवाद---